पाठ और लेखक का नाम

पाठ	लेखक
1. बातचीत	बालकृष्ण भट्ट
2. उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
3. सम्पूर्ण क्रांति	जयप्रकाश नारायण
4. अर्द्धनारीश्वर	रामधारी सिंह दिनकर
5. रोज	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय"
6. एक लेख और एक पत्र	भगत सिंह
7. ओ सदानीरा	जगदीश चन्द्र माथुर
8. सिपाही की माँ	मोहन राकेश
9. प्रगति और समाज	नामवर सिंह
10. जूठन	ओमप्रकाश वाल्मीकि
11. हँसते हुए मेरा अकेलापन	मलयज
12. तिरछ	उदय प्रकाश
13. शिक्षा	जे० कृष्णमूर्ति

Your LOGO Here

1.बातचीत – बालकृष्ण भट्ट

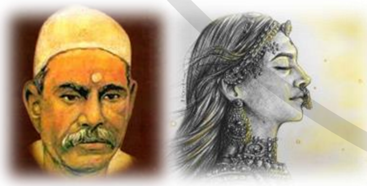

1. बातचीत पाठ एक निबंध है।
2. इस पाठ के लेखक बालकृष्ण भट्ट हैं।
3. बालकृष्ण भट्ट का जन्म 23 जून 1844 ई० में
4. इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
5. बालकृष्ण भट्ट का निधन - 20 जुलाई 1914 ई०में हुआ था।
6. बालकृष्ण भट्ट की माता का नाम पार्वती देवी और पिता का नाम बेनी प्रसाद भट्ट था।
7. बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दुकाल के थे।
8. बालकृष्ण भट्ट के 1000 से अधिक निबन्ध (भट्ट निबंध माला में संकलित) हैं।
9. हिंदी प्रदीप नामक पत्रिका का सम्पादन बालकृष्ण भट्ट ने 1877 ई० में शुरू किया था |
10. बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी प्रदीप का लगभग 33 वर्षो तक सम्पादन किया।

11. बालकृष्ण भट्ट के उपन्यास- रहस्य कथा, अजान एक सुजान, गुप्त वैरी, रसातल यात्रा, उचित दक्षिणा, हमारी घड़ी, सदभाव का अभाव हैं |
12. बालकृष्ण भट्ट के नाटक - पद्मावती, किरातार्जुनीय, वेनी संहार, शिशुपाल वध, नल दमयती (दमयंती स्वयंवर), शिक्षादान, चन्द्रसेन, सीता वनवास, पतित पंचम, मेघनाद वध, कट्टर सूम की एक नकल, वृहन्नला, इंगलैण्डेश्वरी और भारत जननी, भारतवर्ष और कलि, दो दूरदेशी, एक रोगी और एक वैद्य, रेल का विकट खेल, बाल विवाह आदि है |
13. मनुष्य की ईश्वर प्रदत्त शक्तियों में एक हमारी वाक् शक्ति है
14. राविंसन क्रूसो 16 वर्षो के बाद लोगों के बीच आएँ थे |
15. असली बातचीत सिर्फ 2 लोगों के बीच ही संभव है|

पाठ का सारांश

बातचीत पाठ में निबंधकार ने बातचीत के रूप - स्वरूप का वर्णन किया है। मनुष्य को ईश्वर के द्वारा दी गई शक्तियों में वाक्शक्ति का बड़ा स्थान है। इसके बिना व्यक्ति लुंज- पूंज बना रह जायगा। न अपना मनोभाव दूसरों तक पहुँचा सकेगा और न दूसरो के भाव से परिचित हो पाएगा। मानव संस्कृति के विकास का बड़ा आधार वाक्शक्ति है।
वेन जानसन के अनुसार - बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। इसके माध्यम से व्यक्ति एक दूसरे के सुख-दुख का सहभागी बनता है।
मनुष्य वाक् शक्ति का उपयोग बातचीत और भाषण में करता है। दोनों ही भावाभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण एक जैसे होकर भी अलग-अलग हैं।

भाषण जहाँ औपचारिक सम्बोधन से शुरू होता है वही बातचीत में यह बात नहीं होती है। भाषण में चुटीली बातों का प्रयोग होता है जिससे तालियाँ बजती है पर बातचीत में नहीं। बातचीत दो-चार लोगों के बीच होती है भाषण सैकड़ो लोग सुनते हैं। भाषण का विषय निश्चित रहता है जबकि बातचीत में विषय निश्चित नहीं रहता है। उम्र, पेशा, लिंग, आदि के आधार पर बातचीत का विषय बनता है।
एडीसन के अनुसार - श्रेष्ठ बातचीत दो लोगों में होती है। लोगों की संख्या जैसे-जैसे बढ़ती है बातचीत में, अपनापन कम होने लगता है। औपचारिकता बढ़ती है। तीन लोगो की बातचीत अंगुठी में नग की तरह होती है। अधिकतम चार लोगों में बातचीत हो सकती है।

बातचीत भी एक कला है। यूरोप में इसे "आर्ट ऑफ कनवरसेशन" कहते हैं। इसी से सुहृद गोष्ठी होती है। इसमें इस लियाकत या ढंग से लोग अपनी बात कहते हैं कि सुनने वालों के मन में तनिक-भी-चोट नहीं पहुँचती है। उनकी गोष्ठी में प्रेम अपनापन का भाव रहता है जबकि शास्त्रार्थ में अभिमान पूर्ण ज्ञान के दांव-पेंचों की कलाबाजी चलती है। बात-बात में विवाद पैदा हो जाता है।

श्रेष्ठ बातचीत तो आत्मालाप है। क्योंकि बातचीत के लिए समय, स्थान और व्यक्ति की आवश्यकता होती है जबकि आत्मालाप में तो व्यक्ति खुद से बात करता है। इससे व्यक्ति अपने मन के अनसार विषय, दृश्य, घटना का आनन्द ले सकता है। भीतरी मनोवृति के आधार पर वह एक नवीन संसार का निर्माण कर सकता है। बातचीत में वाक्शक्ति या जिह्वा की बड़ी भूमिका होती है। इस पर नियंत्रण कर व्यक्ति क्रोधादि शत्रुओं से बच सकता है। इस प्रकार अवाक रह कर भी लोग आत्मचिंतन के आधार पर बातचीत का आनंद ले सकते हैं। जीवन और जगत को सुन्दर बना सकते हैं। अवाक बातचीत तो मन की एकाग्रता है जीवन का परम साध्य है

व्याख्या करें -

(i) सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति बातचीत निबन्ध से लिया गया है |इसके निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी है |पंक्ति के माध्यम से निबंधकार हमें बताना चाहते है की मौन रहने पर गुण-दोष का पता नहीं चल पाता है। बोलने से उसके भीतर का गुण-दोष प्रकट होने लगता है। कौआ और कोयल भी बोली के आधार पर ही अपना परिचय दे पाते है।वेन जानसन भी यही मानते थे।

(ii)हमारी जिह्वा तो कतरी के समान सदा स्वच्छंद चला करती है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति बातचीत निबन्ध से लिया गया है |इसके निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी है | व्यक्ति गुस्से में आकर कतरनी के समान जिह्वा चलाता है जिसके चलते विवाद हो जाता है। यदि व्यक्ति जिह्वा अर्थात बोली को काबू में कर ले तो बड़े से बड़े लड़ाई को होने से रोका जा सकता है |

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होता?

उत्तर- अगर हममें वाक्शक्ति न होती हो हमें गूंगें बनकर रहना पड़ता। हम दूसरे का सुख-दुख नहीं जान पाते और न अपना सुख-दुख दूसरे को बता पाते। एक दूसरे की कोई सहायता नहीं कर पाने के कारण हमें सामाजिक न होकर पूर्णत: जंगली बन कर जीना पड़ता।

2. बातचीत के सम्बन्ध में बेन जानसन और एडीसन के क्या विचार हैं?

उत्तर:- बेन जानसन के अनुसार बातचीत के माध्यम से व्यक्ति के गुण दोष का पता चलता है। मौन रहने पर अच्छे-बुरे एक ही जैसे लगते हैं। एडीसन ने दो लोगों की बातचीत को श्रेष्ठ माना है। इसमें व्यक्ति खुलकर अपना मनोभाव एक दूसरे के सामने प्रकट करता है।

3. आर्टआफ कनवरसेशन क्या है?

उत्तर- यूरोप में बातचीत के हुनर को आर्ट ऑफ कनवरसेशन कहते हैं। इसे सुहृद गोष्ठी भी कहा जा सकता है। मूलतः पूरी शिष्टता, विनम्रता, शालीनता आदि के साथ बात करने की कला को आर्टआफ कनवर सेशन कहते हैं |

4. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है?

उत्तर- मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका अपने आप से बातचीत करना है क्योंकि इसके लिए न किसी दूसरे व्यक्ति की आवश्यकता होगी और न स्थान की। इससे कोई विरोध और विवाद का डर भी नहीं रहता

5. राम रमौवल का क्या अर्थ है ?

उत्तर :- औपचारिक बातचीत को राम रमौवल कहते हैं। चार से अधिक लोगो की बातचीत में राम रमौवल अधिक होता है। इससे सिर्फ ऊपरी बातचीत होती है |

Objectives

1. बालकृष्ण भट्ट का जन्म कब हुआ था?
(A) 1844 ई0 (B) 1840 ई0
(C) 1834 ई0 (D) 1944 ई0

2. बालकृष्ण भट्ट का निधन कब हुआ था?
(A) 1914 ई0 (B) 1915 ई0
(C) 1814 ई० (D) 1845 ई0

3. बालकृष्ण भट्ट ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?
(A) हिंदी प्रदीप (B) ब्राह्मण
(C) दिगंत (D) समालोचना

4. नूतन ब्रह्मचारी के लेखक का नाम क्या है?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) प्रताप नारायण
(C) बद्री नारायण (D) श्रीधर पाठक

5. रेल का विकट खेल के लेखक का नाम क्या है?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) प्रताप नारायण
(C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (D) नागार्जुन

6. मनुष्य की ईश्वर प्रदत्त शक्तियों में एक है-
(A) बिजली (B) आग
(C) वाक् शक्ति (D) वस्त्र

7. राविंसन क्रूसो कितने वर्षो के बाद लोगों के बीच आएँ?
(A) 16 (B) 18
(C) 15 (D) 20

8.एडीसन ने कितने लोगों के बीच श्रेष्ठ बातचीत मानी है?
(A) 2 (B) 4
(C) 6 (D) 8

9.कितने लोगों की बातचीत को अंगुठी में नग सी माना गया है?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

10. कितने लोगों की बातचीत में फोर्मेलिटी आती है?
(A) 4 (B) 3
(C) 1 (D) 5

11. यूरोप में बातचीत की कला को क्या कहते हैं?
(A) आर्ट ऑफ कनवरसेशन (B) आर्ट ऑफ टॉक
(C) आर्ट ऑफ डायलॉग (D) आर्ट आर्ट डिबेट

12. काव्य कला प्रवीन गोष्ठी को क्या कहते है?
(A) सुहृद गोष्ठी (B) काव्य गोष्ठी
(C) काव्य संगोष्ठी (D) सूरज गोष्ठी

13.आधुनिक शुष्क पंडितो की बातचीत को क्या कहते हैं?
(A) शास्त्रार्थ (B) पुराण पाठ
(C) विद्वान विमर्श (D) पंडित ज्ञानचर्या

14. पच्चीस वर्ष से ऊपर वालो की बातचीत कैसी होती है?
(A) सारगर्भित (B) शास्त्रोचित
(C) पुराणोचित (D) मौजमस्ती

15. पच्चीस वर्ष से नीचे वालों की बातचीत कैसी होती है?
(A) सिनेमा से सम्बन्धित (B) दिलबहलाव
(C) भोजन पर आधारित (D) वस्त्र पर आधारित

16. हमारी भीतरी मनोवृति क्या दिखलाती हैं?
(A) नए-नए रंग (B) नए-नए ढंग
(C) नए-नए फूल (D) नए-नए दृश्य
17. भीतरी मनोवृति को क्या माना गया है?
(A) चमनिस्तान (B) कब्रिस्तान
(C) स्वर्ग (D) नाक
18. जिह्वा को क्या माना गया है?
(A) कतरनी (B) चम्बुक
(C) चाकू (D) ब्लेड
19. क्रोध को क्या माना गया है?
(A) शत्रु (B) मित्र
(C) फरीक (D) पड़ोसी
20. क्रोधादि को काबू करने के लिए किसे काबू करना है?
(A) जिह्वा (B) दिमाग
(C) मुँह (D) कंठ
21. भाषण में किसका मौका रहता है?
(A) नाज-नखरा (B) कूदने
(C) दौड़ने (D) नाचने
22. बालकृष्ण भट्ट का जन्म कहाँ हुआ था?
(A) इलाहाबाद (B) वनारस
(C) कानपुर (D) लखनऊ
23. बातचीत पाठ गद्य कौन सी विधा है?
(A) निंबंध (B) कहानी
(C) उपन्यास (D) भाषण
24. मनुष्य के रूप का साक्षात्कार कब होता है?
(A) बोलने से (B) रोने से
(C) हँसने से (D) चलने से
25. "बोलने से मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है"किसका कथन है?
(A) एडीसन (B) बेन जानसन
(C) मिलर (D) स्पेंसर
26. काव्य कला प्रवीण विद्वनमंडली को क्या कहा जाता है?
(A) सुहृद गोष्ठी (B) शास्त्रार्थ
(C) दोनो (D) कोई नहीं
27. राविंसन क्रूसो ने पहलीवार किसके मुँह से बोली सुनी थी?
(A) व्यास (B) बाल्मीकि
(C) फ्रायडे (D) सटरडे है?
28. बाहरी बातचीत में किसकी आवश्यकता पड़ती
(A) फरीक (B) छात्र
(C) शिक्षक (D) संत
29. चार लोगो से अधिक की बातचीत में क्या होता है?
(A) संवाद (B) शास्त्रार्थ
(C) राम - रमौवल (D) संलाप
30. अनादर का मूल किसे कहा गया है?
(A) दिलजोई (B) शिष्टाचार
(C) बिन बुलाये जाना (D) बुलाने पर न जाना
31. प्रपंचात्मक संसार का आईना किसे कहा गया है?
(A) बाहरी मनोवृति (B) भीतरी मनोवृति
(C) सामाजिक मर्यादा (D) राजनीतिक विमर्श
32. बालकृष्ण भट्ट को आधुनिक हिंदी आलोचना का जन्मदाता किसने कहा?
(A) हजारी प्रसादद्विवेदी (B) रामचंद्र शुक्ल
(C) राम विलास शर्मा (D) उदय प्रकाश
33. बालकृष्ण भट्ट को अध्ययनशील विद्वान और तीक्ष्ण बुद्धि का आलोचन किसने कहा?
(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी (B) राम विलास शर्मा
(C) रामचन्द्र शुक्ल (D) प्रताप नारायण मिश्र
34. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बालकृष्ण भट्ट को अंग्रेजी के किस निबंधकार की श्रेणी में रखा है?
(A) एडीसन और स्टील (B) चीह्व
(C) आर्लन्ड (D) जानसन
35. बातचीत पाठ किस प्रकार का निबंध है?
(A) वर्णनात्मक (B) ललित
(C) विश्लेषणात्मक (D) समीक्षात्मक
36. बालकृष्ण भट्ट किस युग के रचनाकार थे?
(A) भारतेन्दुकाल (B) द्विवेदी काल
(C) छायावाद (D) प्रगतिवाद
37. जो कुछ धुँआ और मवाद जमा रहता है वह भाप बनकर कैसे निकल जाता है?
(A) बातचीत से (B) वहस से
(C) शास्त्रार्थ से (D) लड़ाई से
38. भट्ट निबंधमाला कितने खंडों में प्रकाशित है?
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5

2.उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी)

1. 'उसने कहा था' पाठ के लेखक चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं |
2. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म - 7 जुलाई 1883 ई० में जयपुर, राजस्थान में हुआ था |
3. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 'गुलेर' नामक ग्राम, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के मूल निवासी थे |
4. लेखक का निधन 12 सितम्बर 1922 ई० में हुआ था ।
5. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के पिता का नाम प० शिवराम था|
6. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियाँ - सुखमय जीवन(1911), बुद्ध का कांटा(1911), उसने कहा था (1915 ई०) आदि है |
7. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का निबन्ध- कछुआ धरम, मारेसि मोहि कुठांव, पुरानी हिंदी, भारतवर्ष, संस्कृत की टिपकारी, देवानां प्रिया आदि।
8. अंग्रेजी में- ए पोयम वाय भास, ए कमेंटरी आन वात्सयांस कामसूत्र, द लिटरेरी क्रिटिसिज्म आदि ।

पाठ का सारांश

'उसने कहा था' पाठ चन्द्रधर शर्मा के द्वारा लिखी गई है | यह कहानी पाँच खंडों में विभक्त है। अमृतसर के भीड़ भरे बाजार से कहानी आरंभ होती है जिसमें 12 वर्ष का एक सिक्ख लड़का और आठ साल की एक सिक्ख लड़की संयोगवश मिलते हैं। दोनों का परिचय हुआ। लड़के ने पूछा तेरी कुड़माई हो गई और लड़की धत् कहकर भाग गई। यह क्रम कुछ दिनों तक चलता रहा और एक दिन लड़के की अपेक्षा के विरूद्ध लड़की ने कहा- हाँ, हो गई। सुनते ही लड़का बहुत उदास हो गया। आगे चलकर वही लड़का इस कहानी का नायक लहना सिंह बन गया।

कहानी का दूसरा खंड पच्चीस वर्षों के बाद की घटना पर आधारित है। इसमें प्रथम विश्वयुद्ध के अन्तर्गत फ्रांस और वेल्जियम युद्ध का चित्रण है। पच्चीस वर्ष पहले का लड़का ही लहना सिंह 77 सिक्ख राइफल्स का जमादार बन गया। उसके साथ सुबेदार हजारा सिंह और उसका पुत्र बोधा सिंह भी काम करता था। जब एक केश की पैरवी के लिए लहना सिंह घर आने लगा तो हजारा सिंह भी साथ हो लिया। लौटते समय हजारा सिंह ने लहना सिंह को अपने घर आने को कहा। लहना सिहं जब उसके घर पहुँचा तो वह अचंभित हो गया। बचपन की प्रेमिका आज सुबेदारनी दिखी। दोनों ने एक दूसरे को देखा। पहचानने में देर नहीं लगी। विदा के समय सुबेदारनी ने पति और पुत्र की रक्षा के लिए आंचल फैला दिया। प्रेमिका की चाह ही लहना सिंह के जीवन का उद्देश्य बन गया। बोधा के बीमार पड़ने पर वह कड़ाके की ठंड़ में भी अपना वस्त्र देकर उसे सुलाते रहा और स्वयं उसकी डियूटी करते रहा। एक बार दुश्मन अधिकारी वेश बदलकर उसके खंदक में आ गया। लहना सिंह ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ दुश्मनों का मुकाबला किया। इसी क्रम में वह, बोधा, हजारा सिंह आदि घायल हो गये। देह से काफी खून निकलने के बाद भी वह बोधा और हजारा सिंह को पहले अस्पताल भेज दिया। बाद की गाड़ी की प्रतीक्षा में वह छंटपटाता रहा । प्रेमिका की बात पूरी करने में उसने अपनी जान दे दी। इस प्रकार यह कहानी पुरानी कहानी होने के बाद भी यह पूर्णत: तरो ताजा दिखाई पड़ती है।

व्याख्या करें

(1) मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है।

उत्तर:- प्रस्तुत गद्यांश चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित उसने कहा था कहानी के पांचवे खंड से लिया गया है जिसमें लेखक ने मृत्यु के पूर्व की मन: स्थिति का वर्णन किया है। उस समय सिनेमा के रील की तरह सम्पूर्ण जीवन की घटानाएँ एवं दृश्य सामने में चलती है ।यादें बिल्कुल साफ हो जाती है। यह प्रसंग लहना सिंह की आसन्न मृत्यु के संदर्भ में है। उसे अपने बचपन की घटना बिल्कुल साफ-साफ याद आने लगती है।

(2) बिना फेरे घोड़ा विगड़ता है और बिन लड़े सिपाही

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति उसने कहा था कहानी से लिया गया है | इस कहानी के लेखक चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी है | इसमें लेखक का कहना है की क्रियाशीलता के कारण ही व्यक्ति या वस्तु उपयोगी बना रहता है । घोड़ा दौड़ने के कारण उपयोगी होता है। जब तक उसे प्रत्येक दिन दौड़ाया नहीं जायगा तब तक वह समय पर तेज दौड़ने में सक्षम नहीं हो सकेगा। अर्थात घोड़े की तेजी कायम रखने के लिए उसे प्रतिदिन दौड़ाना जरूरी है। इसी प्रकार सिपाही को भी लगातार लड़ते रहने का अभ्यास करते रहना पड़ता है। अभ्यास छूटने पर तो वे शिथिल हो जायेंगें।

Your LOGO Here